अध्याय 2: क्या लिखूँ?

विषय-सूची 6 प्रश्नावली · 18 प्रश्न

प्रश्नावली 2.1	मेरे उत्तर मेरे तर्क (बहुविकल्पीय प्रश्न)	5 प्रश्न
प्रश्नावली 2.2	मेरी समझ मेरे विचार (बोधात्मक प्रश्न)	5 प्रश्न
प्रश्नावली 2.3	भाव-विस्तार	4 प्रश्न
प्रश्नावली 2.4	व्याकरण — समास (सामासिक शब्द ढूँढ़ना)	1 प्रश्न
प्रश्नावली 2.5	उपसर्ग एवं प्रत्यय	2 प्रश्न
प्रश्नावली 2.6	भाव एक शब्द अनेक	1 प्रश्न

प्रश्नावली 2.1 — मेरे उत्तर मेरे तर्क (बहुविकल्पीय प्रश्न)

प्रश्न 1

"हैट टाँगने के लिए कोई भी खूँटी काम दे सकती है... असली वस्तु है हैट, खूँटी नहीं।" निबंध में 'हैट' और 'खूँटी' का उल्लेख किस भाव को सबसे अधिक उजागर करता है? (क) विषय से अधिक लेखक के भावों की प्रधानता को दर्शाना (ख) विचार से अधिक तथ्य आधारित सामग्री को प्रमुख बताना (ग) शैली से अधिक भाषा व्यवस्था की उपयोगिता बताना (घ) उदाहरण से अधिक सिद्धांत आधारित लेखन का समर्थन करना

हल

सही उत्तर: (क) विषय से अधिक लेखक के भावों की प्रधानता को दर्शाना।
ए.जी. गार्डिनर के अनुसार लेखन की असली वस्तु मन के भाव हैं, विषय (खूँटी) केवल उन्हें टाँगने का माध्यम है।
जैसे हैट टाँगने के लिए कोई भी खूँटी काम दे सकती है, उसी प्रकार मन के भावों को व्यक्त करने के लिए कोई भी विषय उपयुक्त है।
यह उदाहरण यह स्पष्ट करता है कि लेखन में विषय से अधिक लेखक का आंतरिक भाव महत्त्वपूर्ण होता है।

उत्तर: (क) विषय से अधिक लेखक के भावों की प्रधानता को दर्शाना

प्रश्न 2

"उनमें लेखक की सच्ची अनुभूति रहती है... उसका उल्लास रहता है।" मानटेन की पद्धति लेखक के लिए किस निर्णय का आधार बनती है? (क) शैली और स्पष्ट-सहज भाषा को महत्त्व न देना (ख) परंपरागत निबंधकारों को अस्वीकार करना (ग) अध्ययन के बिना अपने विचार प्रस्तुत कर देना (घ) अनुभव आधारित स्वच्छंद लेखन को अपनाना

हल

सही उत्तर: (घ) अनुभव आधारित स्वच्छंद लेखन को अपनाना।
मानटेन ने जो कुछ देखा, सुना और अनुभव किया, उसी को अपने निबंधों में लिपिबद्ध कर दिया।
ऐसे निबंधों में लेखक की सच्ची अनुभूति, सच्चे भावों की अभिव्यक्ति और उल्लास होता है — ये मन की स्वच्छंद

रचनाएँ हैं।

लेखक बख्शी जी ने इसी पद्धति को अपनाने का निर्णय लिया — अर्थात् अपने अनुभव और भावों के आधार पर लिखना।

उत्तर: (घ) अनुभव आधारित स्वच्छंद लेखन को अपनाना

प्रश्न 3

"तरुणों के लिए भविष्य उज्ज्वल... वृद्धों के लिए अतीत सुखद..." यह तुलना किस पर आधारित है? (क) तर्क और भावना (ख) ज्ञान और शिक्षा (ग) परिश्रम और उपलब्धि (घ) अभिलाषा और अनुभव

हल

सही उत्तर: (घ) अभिलाषा और अनुभव।

तरुण जीवन-संग्राम से दूर होने के कारण संसार को मनमोहक देखते हैं और भविष्य के सुंदर स्वप्न देखते हैं — यह उनकी अभिलाषा है।

वृद्ध अपनी बाल्यावस्था और तरुणावस्था से दूर हट आए हैं, इसलिए उन्हें अतीत की स्मृति सुखद लगती है — यह उनका अनुभव है।

इस प्रकार यह तुलना अभिलाषा (तरुण की) और अनुभव (वृद्ध के) पर आधारित है।

उत्तर: (घ) अभिलाषा और अनुभव

प्रश्न 4

निबंध में अमीर खुसरो की कहानी का उल्लेख किस संदर्भ में किया गया है? (क) कविता लेखन की कला को समझाने के लिए (ख) एक साथ कई विषयों को संबोधित करने की प्रतिभा दिखाने के लिए (ग) ढोल के महत्त्व को दर्शाने के लिए (घ) सामाजिक सुधार के उदाहरण के रूप में

हल

सही उत्तर: (ख) एक साथ कई विषयों को संबोधित करने की प्रतिभा दिखाने के लिए।

अमीर खुसरो के पास चार औरतों ने क्रमशः खीर, चरखे, कुत्ते और ढोल पर कविता सुनने की इच्छा जताई।

खुसरो ने एक ही पद्य में चारों की इच्छाओं की पूर्ति कर दी: 'खीर पकाई जतन से, चरखा दिया चला। आया कुत्ता खा गया, तू बैठी ढोल बजा।।'

लेखक इस उदाहरण से यह बताना चाहते हैं कि वे भी एक ही निबंध में 'दूर के ढोल सुहावने' और 'समाज-सुधार' दोनों विषयों का समावेश कर देंगे।

उत्तर: (ख) एक साथ कई विषयों को संबोधित करने की प्रतिभा दिखाने के लिए

प्रश्न 5

निबंध में समाज-सुधार के संदर्भ में क्या कहा गया है? (क) सुधारों की आवश्यकता हर युग में बनी रहती है। (ख) सुधार केवल बड़े विचारकों द्वारा संभव हैं। (ग) सुधार केवल आधुनिक युग की देन हैं। (घ) सुधारों का कोई अंत नहीं, लेकिन दोष समाप्त हो जाते हैं।

हल

सही उत्तर: (क) सुधारों की आवश्यकता हर युग में बनी रहती है।

निबंध में कहा गया है — 'मनुष्य जाति के इतिहास में कोई ऐसा काल ही नहीं हुआ, जब सुधारों की आवश्यकता न हुई हो।'

भारत के इतिहास में बुद्धदेव, महावीर स्वामी, नागार्जुन, शंकराचार्य, कबीर, नानक, महात्मा गांधी जैसे अनेक सुधारक हुए, फिर भी सुधारों का अंत नहीं हुआ।

न दोषों का अंत है और न सुधारों का — यह जीवन की प्रगतिशील प्रकृति का परिचायक है।

उत्तर: (क) सुधारों की आवश्यकता हर युग में बनी रहती है।

प्रश्नावली 2.2 — मेरी समझ मेरे विचार (बोधात्मक प्रश्न)

प्रश्न 1

निबंध लेखन के विषय में ए.जी. गार्डिनर और लेखक के विचारों में क्या अंतर है?

हल

ए.जी. गार्डिनर का विचार है कि लिखने की एक विशेष मानसिक स्थिति होती है जिसमें मन में उमंग, हृदय में स्फूर्ति और मस्तिष्क में आवेग उत्पन्न होता है — उस स्थिति में विषय की चिंता नहीं रहती, कोई भी विषय उपयुक्त हो जाता है।
गार्डिनर के अनुसार असली वस्तु मन के भाव हैं, विषय नहीं — जैसे हैट असली वस्तु है, खूँटी नहीं।
लेखक बख्शी जी का विचार इससे भिन्न है — उन्होंने उस स्वाभाविक मानसिक स्थिति का अनुभव नहीं किया जिसमें भाव अपने आप उठ जाते हों।
लेखक को निबंध लिखने के लिए सोचना, चिंता करना और परिश्रम करना पड़ता है — उनके लिए लेखन सहज स्फूर्ति नहीं बल्कि सचेत परिश्रम की प्रक्रिया है।

उत्तर: गार्डिनर के लिए लेखन स्वाभाविक मानसिक स्फूर्ति से होता है; लेखक बख्शी जी के लिए यह सचेत परिश्रम और चिंतन की प्रक्रिया है।

प्रश्न 2

लेखक के अनुसार वृद्ध और तरुण दोनों ही वर्तमान से असंतुष्ट रहते हैं, पर दोनों की असंतुष्टि के कारण भिन्न हैं। आपके विचार से उनकी असंतुष्टि के क्या-क्या कारण हो सकते हैं?

हल

निबंध के अनुसार तरुण जीवन-संग्राम से दूर हैं इसलिए उन्हें संसार का चित्र बड़ा ही मनमोहक लगता है।
तरुणों की असंतुष्टि का कारण है: वे भविष्य को वर्तमान में लाना चाहते हैं — उनकी अभिलाषाएँ और स्वप्न वर्तमान यथार्थ से बड़े हैं; वे क्रांति के समर्थक होते हैं और मौजूदा व्यवस्था को बदलना चाहते हैं।
वृद्धों की असंतुष्टि का कारण है: वे अपनी बाल्यावस्था और तरुणावस्था से दूर हट आए हैं; उन्हें अतीत की स्मृति सुखद लगती है और वे अतीत के गौरव के संरक्षक होते हैं।
वर्तमान इन दोनों के बीच सदैव क्षुब्ध रहता है — तरुण भविष्य को खींचकर वर्तमान में लाना चाहते हैं तो वृद्ध अतीत को।
इस प्रकार तरुण की असंतुष्टि अधूरी अभिलाषाओं से और वृद्ध की असंतुष्टि खोए हुए अनुभवों की याद से उत्पन्न होती है।

उत्तर: तरुण वर्तमान से इसलिए असंतुष्ट हैं क्योंकि उनकी भविष्य की अभिलाषाएँ वर्तमान से बड़ी हैं; वृद्ध इसलिए असंतुष्ट हैं क्योंकि वे अतीत के गौरव को वर्तमान में देखना चाहते हैं।

प्रश्न 3

नमिता और अमिता किन विषयों पर निबंध लिखवाना चाहती हैं? उनके द्वारा सुझाए गए विषयों पर निबंध लिखने में लेखक को क्या-क्या कठिनाइयाँ आईं?

हल

नमिता का आदेश था कि लेखक 'दूर के ढोल सुहावने होते हैं' इस विषय पर निबंध लिखें।
अमिता का आग्रह था कि लेखक 'समाज-सुधार' पर निबंध लिखें।
'दूर के ढोल सुहावने' विषय पर कठिनाई: यद्यपि लोकोक्ति सत्य है, किन्तु इस पर पाँच पेज का निबंध लिखना कठिन लग रहा था; न तो पुस्तकालय उपलब्ध था, न विश्वकोश।
'समाज-सुधार' विषय पर कठिनाई: यह अनादि काल से चर्चा का विषय रहा है, बड़े-बड़े विज्ञों में भी इस पर विरोध है, इसलिए पाँच पेज में इसे समेटना कठिन था।
इसके अलावा लेखक के पास समय बहुत कम था — केवल दो घंटों में दोनों निबंध तैयार करने थे।
रूपरेखा बनाना और विद्वानों के परस्पर विरोधी मत एक अलग उलझन थे।

उत्तर: नमिता ने 'दूर के ढोल सुहावने होते हैं' और अमिता ने 'समाज-सुधार' पर निबंध लिखवाना चाहा। लेखक को सामग्री की कमी, कम समय, और विषयों की जटिलता की कठिनाइयाँ आईं।

प्रश्न 4

निबंधशास्त्र के आचार्यों ने आदर्श निबंध लिखने की कौन-सी युक्तियाँ सुझाई हैं? आप किसी भी विषय पर निबंध लिखने से पहले किस तरह की तैयारी करते हैं?

हल

निबंधशास्त्र के आचार्यों ने आदर्श निबंध की ये युक्तियाँ सुझाई हैं:
पहली युक्ति — निबंध छोटा होना चाहिए; छोटा निबंध बड़े की अपेक्षा अधिक अच्छा होता है क्योंकि बड़े निबंध में रचना की सुंदरता नहीं बनी रह सकती।
दूसरी युक्ति — निबंध के दो प्रधान अंग हैं: सामग्री और शैली। पहले विषय की सामग्री एकत्र करनी चाहिए, विचार-समूह संचित करना चाहिए।
तीसरी युक्ति — निबंध लिखने से पहले उसकी रूपरेखा तैयार कर लेनी चाहिए।
चौथी युक्ति — भाषा में प्रवाह होना चाहिए; वाक्य छोटे-छोटे पर एक-दूसरे से संबद्ध होने चाहिए।
मानटेन की पद्धति के अनुसार — जो देखा, सुना और अनुभव किया, उसे लिपिबद्ध करना चाहिए।
व्यक्तिगत तैयारी के रूप में: विषय पर मनन करें, संबंधित तथ्य और उदाहरण एकत्र करें, रूपरेखा बनाएँ, और अपने अनुभव व विचारों को क्रमबद्ध करें।

उत्तर: आचार्यों की युक्तियाँ: निबंध छोटा हो, सामग्री और शैली दोनों पर ध्यान दें, पहले रूपरेखा बनाएँ, भाषा प्रवाहमयी हो। मानटेन के अनुसार अनुभव पर आधारित स्वच्छंद लेखन सर्वोत्तम है।

प्रश्न 5

मानटेन ने "जो कुछ देखा, सुना और अनुभव किया, उसी को अपने निबंधों में लिपिबद्ध कर दिया।" निबंध लेखन के लिए देखने, सुनने और अनुभव करने की क्या उपयोगिता हो सकती है?

हल

मानटेन की पद्धति में देखना, सुनना और अनुभव करना निबंध लेखन की नींव है।

देखने की उपयोगिता: प्रत्यक्ष अवलोकन से लेखन में यथार्थता आती है; जो आँखों ने देखा, वह विवरण जीवंत और प्रामाणिक होता है।

सुनने की उपयोगिता: दूसरों के अनुभव और विचार सुनने से विषय की व्यापकता बढ़ती है; लोकोक्तियाँ, कहावतें और कहानियाँ निबंध को समृद्ध बनाती हैं।

अनुभव की उपयोगिता: व्यक्तिगत अनुभव निबंध में सच्ची अनुभूति और उल्लास भर देता है; इससे लेखन में कृत्रिमता नहीं आती।

मानटेन के निबंधों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे मन की स्वच्छंद रचनाएँ हैं — उनमें लेखक की सच्ची अनुभूति, सच्चे भावों की सच्ची अभिव्यक्ति और उल्लास रहता है।

उत्तर: देखना, सुनना और अनुभव करना निबंध को यथार्थ, प्रामाणिक और जीवंत बनाते हैं; इनसे लेखन में सच्ची अनुभूति और उल्लास आता है।

प्रश्नावली 2.3 — भाव-विस्तार

प्रश्न 1

पाठ में से लिए गए निम्नलिखित वाक्यों का अपने शब्दों में भाव-विस्तार कीजिए: "जो तरुण संसार के जीवन-संग्राम से दूर हैं, उन्हें संसार का चित्र बड़ा ही मनमोहक प्रतीत होता है।"

हल

यह वाक्य इस सत्य को उजागर करता है कि अनुभव के अभाव में सब कुछ आकर्षक लगता है।
जो युवा अभी संसार के यथार्थ कठिनाइयों, संघर्षों और निराशाओं से अपरिचित हैं, उन्हें जीवन बड़ा सुंदर और सरल दिखाई देता है।
दूर से पहाड़ की चोटी हरी-भरी और आकर्षक लगती है, पर निकट जाने पर उसकी दुर्गमता और कठिनाइयाँ स्पष्ट होती हैं — उसी प्रकार जो जीवन-संग्राम से दूर हैं, उन्हें संसार का रंगीन चित्र दिखाई देता है।
इसीलिए तरुण भविष्य के सुंदर स्वप्न देखते हैं और वर्तमान की कठोरता से असंतुष्ट रहते हैं।

उत्तर: जो युवा अभी जीवन के संघर्षों से अपरिचित हैं, उन्हें संसार सुंदर और आकर्षक लगता है, क्योंकि दूरी यथार्थ की कठोरता को छिपा देती है।

प्रश्न 2

"मनुष्य जाति के इतिहास में कोई ऐसा काल ही नहीं हुआ, जब सुधारों की आवश्यकता न हुई हो।"

हल

यह वाक्य सुधार की अनंत और सतत आवश्यकता को दर्शाता है।
मानव इतिहास में हर युग में दोष और कमियाँ रही हैं — चाहे वह बुद्ध-महावीर का युग हो, शंकराचार्य-कबीर का युग हो, या आधुनिक काल हो।
सुधारक आते रहे, समाज बदलता रहा, पर नए दोष भी जन्म लेते रहे; जो कभी सुधार था, वही आगे चलकर दोष बन गया।
इसका अर्थ यह है कि सुधार की प्रक्रिया कभी समाप्त नहीं होती — यही जीवन की प्रगतिशीलता है।
इसीलिए वर्तमान काल सदैव 'सुधारों का काल' बना रहता है।

उत्तर: मनुष्य जाति के इतिहास में हर युग में सुधार की आवश्यकता रही है और सदैव रहेगी, क्योंकि नए दोष जन्म लेते रहते हैं — यही जीवन की प्रगतिशीलता है।

प्रश्न 3

"आज जो तरुण हैं, वही वृद्ध होकर अतीत के गौरव का स्वप्न देखेंगे।"

हल

यह वाक्य जीवन-चक्र की एक अटल सत्यता को व्यक्त करता है।
आज का तरुण जो वर्तमान से असंतुष्ट है और क्रांति का समर्थक है, वही जब वृद्ध होगा तो अपनी तरुणावस्था को 'स्वर्णिम अतीत' मानेगा।

तब वह उन्हीं पुरानी बातों, मूल्यों और परंपराओं का संरक्षक बन जाएगा जिन्हें आज वह बदलना चाहता है।
उसकी जगह नए तरुण आएंगे जो भविष्य के स्वप्न देखेंगे और वर्तमान से असंतुष्ट होंगे।
इस प्रकार तरुण और वृद्ध का यह चक्र सदैव चलता रहता है — यही 'दूर के ढोल सुहावने होते हैं' का सार है।

उत्तर: आज का तरुण जब वृद्ध होगा तो अपने अतीत को ही सुंदर मानेगा — यह जीवन-चक्र की अटल सत्यता है जो प्रत्येक पीढ़ी में दोहराती है।

प्रश्न 4

"निबंध छोटा होना चाहिए। छोटा निबंध बड़े की अपेक्षा अधिक अच्छा होता है।"

हल

यह वाक्य निबंध-लेखन के एक महत्त्वपूर्ण सिद्धांत को व्यक्त करता है।
बड़े निबंध में विस्तार अनावश्यक हो जाता है, रचना की सुंदरता और सुगठितता बनाए रखना कठिन हो जाता है।
छोटे निबंध में हर वाक्य, हर विचार महत्त्वपूर्ण होता है; सामग्री केंद्रित और विचार सुस्पष्ट रहते हैं।
जैसे एक छोटी कविता में यदि प्रत्येक शब्द सटीक हो तो वह बड़ी कविता से अधिक प्रभावशाली होती है, उसी प्रकार संक्षिप्त और सुगठित निबंध पाठक पर गहरा प्रभाव छोड़ता है।
यह सिद्धांत आज भी प्रासंगिक है — कम शब्दों में अधिक कहना कुशल लेखन की पहचान है।

उत्तर: छोटा निबंध इसलिए श्रेष्ठ है क्योंकि उसमें विचार केंद्रित, सुस्पष्ट और सुगठित रहते हैं; बड़े निबंध में रचना की सुंदरता बनाए रखना कठिन होता है।

प्रश्नावली 2.4 — व्याकरण — समास (सामासिक शब्द ढूँढ़ना)

प्रश्न 1

निबंध में आए सामासिक शब्द ढूँढ़कर उनका समास विग्रह कीजिए और समास का नाम लिखिए। (यह एक खुला कार्य है — नीचे पाठ से लिए गए प्रतिनिधि उदाहरण दिए गए हैं।)

हल

निबंधशास्त्र = निबंध का शास्त्र → तत्पुरुष समास (उदाहरण तालिका में दिया गया है)
निबंध-रचना = निबंध की रचना → तत्पुरुष समास
समाज-सुधार = समाज का सुधार → तत्पुरुष समास
विचार-समूह = विचारों का समूह → तत्पुरुष समास
जीवन-संग्राम = जीवन का संग्राम → तत्पुरुष समास
विवाहोत्सव = विवाह का उत्सव → तत्पुरुष समास
नामकरण = नाम का करण (नामकरण संस्कार) → तत्पुरुष समास
बाल्यावस्था = बाल्य की अवस्था → तत्पुरुष समास
नव-वधू = नई वधू → कर्मधारय समास
विश्वकोश = विश्व (संसार) का कोश → तत्पुरुष समास
अतीत-गौरव = अतीत का गौरव → तत्पुरुष समास
नोट: 'विचार-विमर्श' पाठ में नहीं है — इसे सामासिक शब्दों की सूची में न लिखें।

उत्तर: पाठ के प्रमुख सामासिक शब्द: निबंधशास्त्र, निबंध-रचना, समाज-सुधार, विचार-समूह, जीवन-संग्राम, विवाहोत्सव, नामकरण, बाल्यावस्था, नव-वधू, विश्वकोश — इनमें से अधिकांश तत्पुरुष समास हैं; नव-वधू कर्मधारय समास है।

प्रश्नावली 2.5 — उपसर्ग एवं प्रत्यय

प्रश्न 1

नीचे दिए गए वाक्यों को उचित उपसर्ग या प्रत्यय लगाकर पूरा कीजिए: (i) निबंध लिखना बड़ी _____ (कठिन...) की बात है। (ii) वर्तमान से दोनों को _____ (संतोष) होता है। (iii) वाक्यों में कुछ _____ (स्पष्ट...) भी चाहिए, क्योंकि यह _____ (...स्पष्ट...) या _____ (...बोध) गांभीर्य ला देती है।

हल

(i) निबंध लिखना बड़ी **कठिनाई** की बात है। (कठिन + आई = कठिनाई, यहाँ प्रत्यय 'आई' लगाकर संज्ञा बनी)

(ii) वर्तमान से दोनों को **असंतोष** होता है। (अ + संतोष = असंतोष, यहाँ 'अ' उपसर्ग लगाकर विलोम बना; निबंध में भी यही लिखा है — 'वर्तमान से दोनों को असंतोष होता है')

(iii) वाक्यों में कुछ **स्पष्टता** भी चाहिए, क्योंकि यह **अस्पष्टता** या **दुर्बोधता** गांभीर्य ला देती है।

स्पष्टता: स्पष्ट + ता (प्रत्यय 'ता')

अस्पष्टता: अ + स्पष्ट + ता (उपसर्ग 'अ' + प्रत्यय 'ता')

दुर्बोधता: दुर् + बोध + ता (उपसर्ग 'दुर्' + प्रत्यय 'ता'); निबंध में 'दुर्बोधता गांभीर्य ला देती है' — यही पंक्ति पाठ में है।

उत्तर: (i) कठिनाई (ii) असंतोष (iii) स्पष्टता, अस्पष्टता, दुर्बोधता

प्रश्न 2

नीचे दिए गए शब्दों में उपसर्ग या प्रत्यय लगाकर नए शब्द बनाकर लिखिए: मधुर, सुधार, सुंदर, गति, समाज (उदाहरण: मधुर → मधुरता, मधुरमय, सुमधुर)

हल

मधुर → मधुरता (मधुर+ता), मधुरमय (मधुर+मय), सुमधुर (सु+मधुर), मधुरिमा (मधुर+इमा)

सुधार → सुधारक (सुधार+क), सुधारना (सुधार+ना), असुधार (अ+सुधार), सुधारवादी (सुधार+वादी)

सुंदर → सुंदरता (सुंदर+ता), सुंदरी (सुंदर+ई), असुंदर (अ+सुंदर), सुंदरतम (सुंदर+तम)

गति → गतिशील (गति+शील), सद्गति (सत्+गति), दुर्गति (दुर्+गति), गतिहीन (गति+हीन)

समाज → सामाजिक (समाज+इक), समाजवाद (समाज+वाद), समाजसेवा (समाज+सेवा), असामाजिक (अ+सामाजिक)

उत्तर: सुधार → सुधारक, असुधार; सुंदर → सुंदरता, असुंदर; गति → गतिशील, दुर्गति; समाज → सामाजिक, असामाजिक

प्रश्नावली 2.6 — भाव एक शब्द अनेक

प्रश्न 1

इस पाठ में अनेक ऐसे शब्दों का प्रयोग किया गया है जिनके अर्थ परस्पर मिलते-जुलते हैं। उदाहरण के लिए, विचार-मनन-चिंतन या सुहावने-मधुर-मनमोहक। पाठ में से ऐसे शब्द ढूँढ़िए तथा वाक्य प्रयोग के द्वारा उनके अर्थ स्पष्ट कीजिए।

हल

पाठ में मिलते-जुलते अर्थ वाले शब्द-समूह:

1. उमंग – स्फूर्ति – आवेग: तीनों लेखन की मानसिक उत्तेजना को व्यक्त करते हैं।
वाक्य: कविता पढ़ते समय मन में उमंग जागती है, स्फूर्ति आती है और लिखने का आवेग उठता है।
2. विचार – मनन – चिंतन: तीनों सोचने की प्रक्रिया से संबंधित हैं।
वाक्य: किसी भी समस्या के समाधान के लिए गहन विचार, मनन और चिंतन आवश्यक है।
3. सुहावने – मधुर – मनमोहक: तीनों आनंददायक और मनोहर का भाव देते हैं।
वाक्य: दूर के ढोल सुहावने लगते हैं, उनकी मधुर ध्वनि मनमोहक होती है।
4. अनुभूति – भाव – उल्लास: तीनों आंतरिक भावनाओं से संबंधित हैं।
वाक्य: लेखक की सच्ची अनुभूति, उसके भाव और उल्लास ही निबंध को जीवंत बनाते हैं।
5. कर्कश – कोलाहल – हल्ला: तीनों कानों को अप्रिय लगने वाले शोर को व्यक्त करते हैं।
वाक्य: ढोल की कर्कश ध्वनि, बाजार का कोलाहल और भीड़ का हल्ला समीप रहने वालों को कष्ट देता है।

उत्तर: पाठ में मिलते-जुलते शब्द-समूह: उमंग-स्फूर्ति-आवेग, विचार-मनन-चिंतन, सुहावने-मधुर-मनमोहक, अनुभूति-भाव-उल्लास, कर्कश-कोलाहल-हल्ला।